



सुरलोक समाचार

पत्रकारिता के छात्रों द्वारा सम्पादित

हिन्दी संदर्शिका



श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, देव नगर, नई दिल्ली-110005

अप्रैल, 2024

पृष्ठ संख्या - 1

>> छात्रों की कलम से

>> संपादकों के विचार

>> गतिविधियाँ

लोकसभा चुनाव 2024 : राम मंदिर-भारतीय संस्कृति का पावन तीर्थस्थल



बाबुल
हिन्दी पत्रकारिता
एवं जनसंघर्ष
विभाग वर्ष

2024 का लोकसभा चुनाव भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ होगा। यह चुनाव न केवल देश के राजनीतिक भविष्य को निर्धारित करेगा, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा। **आगामी लोकसभा चुनाव के केंद्र में रहेंगे ये मुख्य मुद्दे:**

राष्ट्रीय सुरक्षा: आतंकवाद, सीमा विवाद और चीन का बढ़ता प्रभाव भारत के लिए प्रमुख सुरक्षा चुनौतियाँ हैं। अगली सरकार को इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक मजबूत और रणनीतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।

अर्थव्यवस्था: भारत की अर्थव्यवस्था धीमी गति से बढ़ रही है। बेरोजगारी, गरीबी और असमानता जैसे मुद्दे अभी भी बड़ी चिंताएँ हैं। अगली सरकार को अर्थव्यवस्था को गति देने और सभी नागरिकों के लिए समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए ठोस नीतियाँ बनानी होंगी।

सामाजिक न्याय : जाति, धर्म,

लिंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव भारत में बड़ी समस्याएँ हैं। अगली सरकार को सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने और सभी नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करने होंगे।

एक नज़र में एनडीए गठबंधन:

नेतृत्व: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन में भाजपा, शिवसेना (शिंदे गुट), जदयू, अकाली दल और कुछ अन्य क्षेत्रीय दल शामिल हैं।

मुख्य मुद्दे: राष्ट्रीय सुरक्षा, विकास, हिंदुत्व और सामाजिक न्याय एनडीए गठबंधन के मुख्य मुद्दे हैं।

प्रमुख नीतियाँ: एनडीए गठबंधन ने जीएसटी, नोटबंदी, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, खेलो इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी नीतियाँ और योजनाएँ लागू की हैं।

एक नज़र में इंडिया गठबंधन:

नेतृत्व: इंडिया गठबंधन में कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, डीएमके, आरजेडी और कुछ अन्य क्षेत्रीय दल शामिल हैं।

मुख्य मुद्दे: बेरोजगारी, गरीबी, किसानों की समस्याएँ, सामाजिक

न्याय, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार इंडिया गठबंधन के मुख्य मुद्दे हैं।

प्रमुख नीतियाँ: इंडिया गठबंधन के पास दिखाने के लिए मनरेगा, आधार, राइट टू इन्फॉर्मेशन, स्वावलंबन योजना और शिक्षा का अधिकार जैसी नीतियाँ और योजनाएँ हैं।

परिणाम करेगा निर्धारित देश का विकास:

2024 का चुनाव भारत के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ होगा। इस चुनाव का परिणाम यह निर्धारित करेगा कि देश किस दिशा में आगे बढ़ेगा। यह चुनाव यह भी निर्धारित करेगा कि भारत आने वाले वर्षों में किन चुनौतियों का सामना करेगा और उनसे कैसे निपटेगा।

2024 का चुनाव भारत के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर होगा। यह चुनाव देश को एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाने का अवसर होगा। सभी नागरिकों को इस चुनाव में भाग लेना चाहिए और एक ऐसी सरकार चुननी चाहिए जो राष्ट्र के हित में काम करे।



बाबू चौधरी
हिन्दी पत्रकारिता
एवं जनसंघर्ष
विभाग वर्ष

अयोध्या में नवनिर्मित राममंदिर भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह मंदिर भगवान श्रीराम की उपासना के केंद्र के रूप में जाना जाता है और उनके भक्तों के लिए पवित्र स्थलों में से एक है। इस मंदिर का निर्माण उस स्थान पर किया गया है, जहाँ भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था, इसलिए यह मंदिर हिंदू धर्म के अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है।

अयोध्या के इस राम मंदिर का

इतिहास बहुत प्राचीन है। इससे कई पुरानी कथाएँ और ऐतिहासिक घटनाएँ जुड़ी हुई हैं। मुख्य रूप से इस मंदिर का निर्माण भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम के भव्य स्वरूप के स्मरण में किया गया है। यह अब भगवान श्रीराम के संदेशों 'वैश्विक सत्य, न्याय और अच्छाई के स्वरूप का प्रतीक बन चुका है और उनके भक्तों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। अयोध्या के इस राम मंदिर को लेकर विवाद भी हुआ है, जो जग जाहिर है।

हिन्दुओं के एक विशाल समुदाय ने भगवान राम के भव्य मंदिर के निर्माण के लिए लंबा संघर्ष किया। लंबे समय तक चले इस संघर्ष के बाद आखिरकार राम मंदिर का निर्माण हो चुका है। सुप्रीम कोर्ट के निर्णयानुसार राम मंदिर का निर्माण किया गया है। यह भारतीय समाज के लिए एक बड़ी उपलब्धि है और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

इस प्रकार, राम मंदिर भारतीय समाज के लिए एक गौरवशाली स्थान है, जो हमारे इतिहास और संस्कृति के महत्वपूर्ण स्वरूप को दर्शाता है। सभी हिंदुओं का दायित्व है कि वे भगवान श्री राम के आदर्शों का पालन करते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए स्वयं का एवं अपने समाज का कल्याण करें। साथ ही श्री राम की भक्ति के द्वारा मोहमाया से मुक्ति और मोक्ष प्राप्त करें।

भारत में नागरिकता संशोधन अधिनियम लागू



रोहित
हिन्दी पत्रकारिता
एवं जनसंघर्ष
विभाग वर्ष

भारत सरकार ने 11 मार्च 2024 को नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 को लागू करने संबंधी अधिसूचना जारी कर दी। नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) भारतीय नागरिकता के तत्वों में परिवर्तन करने वाला एक महत्वपूर्ण अधिनियम है जो 11 दिसंबर 2019 को पारित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य है कि वे लोग जिन्होंने अपने निवास स्थान से निकाले जाने के कारण परेशानियों का सामना किया है, उन्हें भारत की नागरिकता प्रदान की जाए।

नागरिकता संशोधन कानून

भारत के तीन पड़ोसी मुस्लिम बहुल देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के उन अल्पसंख्यकों को भारतीय नागरिकता देने की राह खोलता है, जो दिसंबर 2014 तक किसी प्रताड़ना का शिकार होकर भारत में आ गए हैं। इनमें गैर-मुस्लिम समुदाय यानी हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई समुदाय के लोग भी शामिल हैं। भारत के मुसलमानों या किसी भी धर्म और समुदाय के लोगों की नागरिकता को इस अधिनियम से कोई खतरा नहीं है। नागरिकता संशोधन अधिनियम को लेकर विरोध और समर्थन दोनों देखे गए। कुछ लोग

इसे एक ऐसा प्रशासनिक कदम मानते हैं जो नागरिकता को सुधारने का प्रयास करता है, जबकि दूसरे इसे धार्मिक और राजनीतिक विवाद का मुद्दा मानते हैं।

कुछ लोग यह मानते हैं कि इससे सिर्फ विशेष धर्मों के व्यक्तियों को ही लाभ मिलेगा, जबकि दूसरे इसे सभी धर्मों के लोगों के लिए नागरिकता का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास मानते हैं। इस प्रकार, नागरिकता संशोधन अधिनियम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विवाद का मुद्दा बन गया है। इस अधिनियम के विरोधियों का मानना है कि इस कानून को लागू करने में मुस्लिमों के साथ भेदभाव किया जा

रहा है और इसमें मुसलमानों को भी शामिल करना चाहिए। जबकि सरकार का कहना है कि यह अधिनियम केवल मुस्लिम बहुलता वाले देशों के अल्पसंख्यकों को ही नागरिकता प्रदान करने की सुविधा देता है।

इन देशों में मुसलमान बहुसंख्यक हैं, तो वे वहाँ कैसे प्रताड़ित हुए। इसीलिए भारत में प्रताड़ित होकर आने वाले अल्पसंख्यकों को ही नागरिकता मिलनी चाहिए। नागरिकता संशोधन बिल पर आरोप और आपत्तियाँ अपनी जगह हैं, किंतु यह भी सच है कि इससे पड़ोसी देशों में सताए कुछ लोगों को राहत अवश्य मिलेगी

लाइक की लालच में जान की बाजी लगाते युवा



शुशी शर्मा
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

आज के समय में युवाओं में सोशल मीडिया पर लाइक पाने की ऐसी होड़ लग गई है कि जिसके चलते वे अपनी जान की बाजी लगाने से भी नहीं कतराते। ज्यादा लाइक व लोगों के बीच जल्दी प्रसिद्धि पाने के चक्कर में ऐसे खतरनाक स्टंट करके दिखाते हैं, जो उनके स्वयं के लिए जानलेवा साबित हो सकते हैं। सड़क परिवहन विभाग के द्वारा यात्रियों की सुरक्षित व सुविधाजनक यात्रा के लिए ट्रेफिक रूल्स बनाए गए हैं, पर उनका पालन तो बहुत दूर की बात है, उन नियमों की धजियाँ उड़ती नजर आ रही हैं। अधिक लाइक व वायरल होने के चक्कर में युवा ऐसे नए-नए करतब करते

नजर आते हैं, कि पूछिए मत। ऐसी ही कई वीडियो देश के अलग-अलग हिस्सों से सामने आ रही हैं, जिनमें युवक-युवतियाँ किसी फिल्मी अभिनेता या अभिनेत्री की तरह चलती बाइक पर रोमांस करते नजर आ रहे हैं। लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि फिल्मों में ऐसे स्टंट पूरी निगरानी में किये जाते हैं। वे अन्य कई तरह की हरकतें करते नजर आते हैं। जैसे बिना हेलमेट के ओवरस्पीडिंग करते हुए व चार पहिया वाहन की छत पर पुश अप्स करते हुए युवक की वीडियो सामने आई।

पहले के समय में यदि कोई ट्रेफिक के नियमों का उल्लंघन करता था, तो यह उस व्यक्ति के लिए शर्मिंदगी की बात थी। लेकिन अब तो लाइक की ऐसी होड़ लग गई है कि ट्रेफिक के रूल्स का उल्लंघन करने पर वीडियो बनाते हैं और उसे सोशल मीडिया पर डाला जाता है। वायरल होने के चक्कर में,

यह सोचकर कि पता नहीं लोगों को क्या पसंद आ जाए और हम वायरल हो जाए।

ऐसे कई ब्लॉगर्स हैं जो अधिक प्रसिद्धि व फेमस होने के चक्कर में स्टंटबाजी या ओवर स्पीडिंग करते हैं और अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। उनकी मौत के लिए कहीं ना कहीं उनके माता-पिता भी दोषी हैं, क्योंकि केवल बाइक या कार खरीद कर देने भर से जिम्मेदारी खत्म नहीं हो जाती बल्कि देते समय उन्हें उसका सही प्रयोग सिखाना भी उनकी ही जिम्मेदारी है। लेकिन अब ट्रेफिक पुलिस इन्हें निशाने पर ले रही है और ऐसे ओवर स्पीडिंग करने वालों से तगड़ा जुर्माना वसूल कर रही है। सोचने योग्य बात यह है कि हम ईंसान हैं, जिसमें अपना अच्छा व बुरा सोचने की क्षमता होती है। हमारी स्वयं की सुरक्षा के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होने चाहिए ना कि इसके लिए किसी जुर्माने का डर होना चाहिए।



दुर्गेश
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
तृतीय वर्ष

हमारे समाज में आज जहाँ किसानों की स्थिति दयनीय समझी जाती है, वहीं व्यवसाय में लगे व्यक्ति खुशहाल माने जाते हैं। आज हम जिस गाँव की बात कर रहे हैं, वह है उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले का सीस्ता गाँव। यहाँ किसानों की स्थिति काफी बेहतर है, क्योंकि वे सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त हैं। एक कारण किसानों के मध्य मेलमिलाप और प्रेमभाव को समझा जाता है। कहना आसान होगा कि शायद उसी के चलते क्षेत्र की स्थिति बेहतर समझी जाती है, लेकिन एक कारण यह भी है कि यहाँ जहाँ किसान बाकी परेशानियों से मुक्त है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण उनके लिए मुसीबत साबित हो रहा है। ऐसे में यहाँ हर एक व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति को महत्व देता है। गाँव का प्रत्येक निवासी एक दूसरे के हितों की रक्षा के लिए स्वेच्छा से कार्य करता है। यहाँ किसानों के लिए उनकी खेती ही भक्ति स्वरूप है। यहाँ खेती को दूसरी सभी चीजों से अधिक महत्व दिया जाता है। जीवनयापन के लिए जिन खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है, वे सभी खेती के जरिये ही पूरी की जाती हैं। जनवरी माह में मुख्यतः आलू की खेती की जाती है, लेकिन इसके अलावा मूली, धनिया,

लहसुन आदि की खेती भी की जाती है।

यह गाँव केवल खेती के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि धार्मिक-सामाजिक कार्यों के मामले में भी यह आगे है। इस गाँव के पूर्व प्रधान की बात की जाए, तो उनका नाम राजीव कुमार बघेल है। ये गाँव के लोकप्रिय प्रधान के रूप में उभरे। उनके निर्देशन में गाँव सीस्ता में अनेक धार्मिक आयोजन हुए। किसानों के मध्य मेलमिलाप और प्रेमभाव को समझा जाता है। कहना आसान होगा कि शायद उसी के चलते क्षेत्र की स्थिति बेहतर समझी जाती है, लेकिन एक कारण यह भी है कि यहाँ जहाँ किसान बाकी परेशानियों से मुक्त है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण उनके लिए मुसीबत साबित हो रहा है। ऐसे में यहाँ हर एक व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति को महत्व देता है। गाँव का प्रत्येक निवासी एक दूसरे के हितों की रक्षा के लिए स्वेच्छा से कार्य करता है। यहाँ किसानों के लिए उनकी खेती ही भक्ति स्वरूप है। यहाँ खेती को दूसरी सभी चीजों से अधिक महत्व दिया जाता है। जीवनयापन के लिए जिन खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है, वे सभी खेती के जरिये ही पूरी की जाती हैं। जनवरी माह में मुख्यतः आलू की खेती की जाती है, लेकिन इसके अलावा मूली, धनिया,

कब अपनाएँगे लोग हमें ?



लता पांडे
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

यह कहानी एक छोटे से परिवार की है, जो अपने गाँव से निकल कर शहर में रहने आया था। इस परिवार के लोगों को शहर में आए हुए दो महीने हो चुके थे और उन्हें रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं मिल रहा था। जहाँ भी वे लोग किराए के लिए मकान लेते, वहाँ के लोग उन्हें ज्यादा समय के लिए बसने नहीं देते। किसी न किसी वजह से उस परिवार को जगह छोड़नी पड़ती थी। किसी तरह से बस उनके दिन शहर में कट रहे थे। इस परिवार को पता चला कि इसी शहर में एक जगह एक बड़े मकान में करीब दस परिवार किराए पर बीस वर्षों से रह रहे थे। कुछ दिन पहले ही उस मकान में एक कमरा खाली हुआ। लेकिन वे नहीं जानते थे कि मकान में बसे बाकी किराएदारों को इस बात की चिंता होने लगी थी, कि अब इस कमरे में कोई छोटी जाति के लोग रहने न लग जाए। अगले ही दिन वह परिवार इस मकान में कमरा देखने गया। लेकिन उस मकान में रह रहे लोग उस परिवार से उनकी जाति व धर्म पूछने लगे। जैसा कि डर था कि उस परिवार ने अपनी जाति बताई, उसे सुनते ही वे लोग कमरे को लेकर कई बहाने बनाने लगे। कुछ लोगों ने कहा इस मकान का मालिक अच्छा नहीं है, कुछ का कहना था पानी की बड़ी समस्या होती है। इसी तरह सभी लोग कोई न कोई समस्या बताने लगे। हर बार की तरह एक बार फिर वह परिवार उस मकान से चुपचाप चला गया।

बचपन

जहाँ तहाँ ढूँढ़ता हूँ मैं,
बचपन का वो आराम,
वो मस्ती भरी सुबह,
वो चैन भरी शाम।
वो होठों पर थिरकती हँसी,
वो दोस्त मेरे नादान।

वो लंबी गली की दौड़,
पतंगों को पाने की होड़।
हमेशा कुछ सीखने की ओर,
सारी परेशानियों को पीछे छोड़।
हर जगह मेरी चंचलता का शोर,
सब डगर ढूँढ़ता हूँ मैं।

कभी गहन अंधेरे में भी दिखती है,
बचपन की वो यादें।
वो खट्टी-मीठी लड़ाई,
और वो पल में टूट जाने वाले वादे।

वो कागज की कश्ती,
वो बारिश की मस्ती।
वो दादी की कहानियाँ,
और मेरी कुछ नादानियाँ।

हर पल ढूँढ़ता ही रहता हूँ मैं,
मेरी बचपन की मुस्कान।
वो निश्चल मन मेरा,
जिसका था सभी को ध्यान।

- सौरभ मिश्रा

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

घर से दूर

छोड़ आया मैं पूरे घर को,
मित्र, परिवार अपने शहर को।
माँ की हर पल याद सताए,
इस विचलित मन को कौन समझाए।

नैनो में कई सपने संजोकर,
आ गया हूँ नए सफर पर।
कामयाब होना आसान नहीं है,
खानी पड़ेगी दर दर की ठोकर।

मेरी माँ भी मुझे याद करेगी,
यह सोच सोच कर आँहें भरूँगी।
कौन उसके बच्चे का ख्याल रखेगा,
नालायक जैसी मीठी गालियाँ कौन कहेगा।

बहन की राखी भी मुझे बुलाएगी,
पर मेरी कलाई सूनी पड़ जाएगी।
इस साल भी तीज त्यौहार सब आएंगे
लेकिन घर वाले मुझे ना पाएंगे।

जिस भाई ने ढाल बनकर मुझे बचाया,
उसे भी मैं पीछे छोड़ आया।
जिस पिता ने कभी कुछ ना बोला,
जुदाई की घड़ी ने उन्हें भी टटोला।

लेकिन यह भी जीवन का एक हिस्सा है,
सभी कामयाब लोगों का ऐसा ही किस्सा है।
बहुत बार मन करता है वापस लौट जाता हूँ,
पर यही सोच कर मैं रुक जाता हूँ।

- शुभम कुमार

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार
द्वितीय वर्ष

कलियुग की एक रहस्यमय कहानी : 'अज्ञात राही'



आशी
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
तृतीय वर्ष

यह कलियुग के दौरान एक अज्ञात राही की कथा है, जो एक अत्यंत अद्भुत और रहस्यमय प्रतिभा से युक्त था। यह राही कभी भी, किसी को अपना असली नाम नहीं बताता था और उसके परिवार और परिचित लोगों के बारे में भी कोई जानकारी नहीं थी। वह एकांत में रहने वाला और अनुपम गुणों से युक्त था।

यह राही एक दिन, एक गाँव में आया और वहाँ के लोगों को अनोखे सवालों की चुनौती देने लगा। उसने बताया कि वह एक साधु और भगवान का अवतार है। उसके विचारों और उसके व्यवहार ने लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। एक दिन गाँव के लोगों ने राही से पूछा, 'तुम्हारा असली नाम क्या है?' हँसते हुए उत्तर दिया, 'मेरा नाम 'अज्ञात' है, क्योंकि मैं हर किसी के लिए अज्ञात हूँ।' एक दिन, अचानक राही गाँव के निकट के जंगल में

गया। वहाँ एक बुद्धिमान ऋषि से मिला, जो उसे बहुत कुछ सिखाने को तैयार था। ऋषि ने उसे जीवन के रहस्यों के बारे में बहुत कुछ सिखाया और उसका वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति की दिशा में मार्गदर्शन किया। उस दिन से, राही ने अपने जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखना शुरू किया और वह अधिक उज्ज्वल, धार्मिक और संतुलित बन गया। वह अपने अद्भुत अनुभवों को लेकर गाँव में लौटा और लोगों को जीवन की सही दिशा में अभिप्रेरित किया। इस कहानी के राही का असली नाम हो सकता है 'अज्ञात', लेकिन उसकी शक्तियों, ज्ञान और आत्मा के प्रकाश के कारण वह लोगों के दिलों में हमेशा याद रहेगा। उसकी कहानी हमें यह सिखाती है कि असली शक्ति और महत्व व्यक्तित्व में होता है, नाम में नहीं।

गाँव नहीं तो हम नहीं

आखिर क्यों है धर्म के मामलों में कानूनी प्रतिबंधों की आवश्यकता



रोहित
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
एवं समाज

'सुना है उसने खरीद लिया है करोड़ों का घर शहर में। मगर आँगन दिखाने आज भी वो बच्चों को गाँव लाता है'

कुछ साल पहले ये पंक्तियाँ शहर के निवासियों पर सटीक बैठती थीं, लेकिन आज एक बड़े शहरी वर्ग का गाँव जाना किसी सपने से कम नहीं है।

यू तो भारत को गाँवों का देश कहा जाता है, और यह सही भी है क्योंकि यहाँ शहरों से ज्यादा गाँव हैं। भारत में लगभग 6 लाख 50 हजार (6,49,481) गाँव हैं, जबकि शहरों की संख्या लगभग 40 हजार ही है। हैरानी की बात तो यह है कि आज भी गाँवों की संख्या ज्यादा होने के बावजूद अधिकतर जनसंख्या शहरों में वास करती है।

पहले देश की आबादी का बड़ा हिस्सा गाँवों में रहता था, लेकिन आज के दौर में लोग गाँव से शहरों की तरफ भागे चले जा रहे हैं। रोजमर्रा की जरूरतों ने लोगों को इस कदर मजबूर किया है कि लोग शहरों की तरफ पलायन करने के लिए बेबस हो गए हैं। लेकिन जब भी बात जीवन और खुशहाली की होती है, तो लोग गाँवों को ही याद करते हैं।

डॉ. सुलक्षणा अहलावत की एक पंक्ति है—
'शहरों में कहाँ मिलता है वो सुकून जो गाँव में था,
जो माँ की गोदी और
नीम-पीपल की छाँव में था।'

गाँव को हमारी संस्कृति की आत्मा कहा जाता है। लेकिन हमारे ही कारण अब ये आत्मा धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है।

कुछ समय पहले किसी भी बच्चे से अगर पूछा जाता था कि वो गर्मी की छुट्टियों में कहाँ गया था तो हर बच्चों का एक ही जवाब रहता था कि मैं अपने गाँव गया था। और आज किसी बच्चे से पूछो तो वह शायद यह शिमला, मनाली, नैनीताल या गोवा जैसा कोई नाम लेगा। ऐसे बच्चों की संख्या कम हुई है, जो छुट्टियों में गाँव जाते हैं। आज के लोग गाँव को भूलते जा रहे हैं। लोग अपने बच्चों को गाँव का महत्व नहीं बता रहे।

हमारी सम्यता, संस्कृति, परंपरा और प्रथा को समाप्त होने से जो बचाता हुआ आ रहा है, वह गाँव ही है। यह प्रमाणित है कि कोई भी सम्यता अपनी संस्कृति, भाषा और अपनी प्रथाओं से ही जानी जाती है और इन्हीं सब के कारण वह सम्यता युगों-युगों तक जीवित रहकर अमर हो जाती है।

आज हम गाँव के महत्व को भूलते जा रहे हैं। हम ये भूल रहे हैं कि हमारी सम्यता इतनी फल-फूल रही है, तो उसका कारण गाँव ही हैं। अगर गाँव नहीं तो हमारी सम्यता नहीं, इस बात को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। गाँव नहीं तो हम नहीं, यह विचार हमें हमेशा याद दिलाता है कि हमारा संबंध अपनी मूल भूमि से मजबूत है और इसे सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है।



आशी चौधरी
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
एवं समाज

किसी भी नए कायदे, कानून का निर्माण या उसमें संशोधन गहन मंथन के बाद किया जाता है। धार्मिक स्थलों से संबंधित कानून और नियम बहुत संवेदनशील होते हैं। मंदिर कमेटियों लंबे अरसे से गरिमाहीन वस्त्र और मोबाइल फोन के मंदिर में अत्यधिक इस्तेमाल पर नजर बनाए हुए हैं। इसके कारण उन्हें मंदिरों की गरिमा को बनाए रखने के लिए सख्त रुख अपनाते हुए कड़े नियम बनाने पड़े। बड़ा सवाल यह है कि इन नियमों व

सख्त रवैया अपनाने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी? मंदिर, मठ व आश्रमों में व्यक्ति अपने मन की शांति की प्राप्ति के लिए जाता है। वहाँ भी मंदिर की गरिमा को भंग करने वाले वस्त्र हो या मंदिर में सेल्फी या वीडियो लेना यह कहाँ तक सही है? इन सब आडंबरों की धार्मिक पवित्र स्थान पर कोई गुंजाइश ही नहीं है। मंदिर में ईश्वर की आराधना और पूजा-अर्चना होना चाहिए, न कि इस तरह की हरकतें। इन्हीं सभी हरकतों का ही नतीजा है कि मंदिर ट्रस्ट की ओर से बाँके बिहारी मंदिर में मोबाइल

फोन पर प्रतिबंध व काशी विश्वनाथ में गरिमामय वस्त्र के नए नियम तैयार किये जा रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया अलग बात है लेकिन इसी के साथ-साथ धार्मिक जगहों पर अपनी सांस्कृतिक व सम्यता को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। यह काफी विचारणीय व दुःखद है कि हमें हमारे ईश्वर से मिलने से पूर्व भी नियमों की आवश्यकता है। बहरहाल हमें स्वयं ही इन बातों का ध्यान रखना चाहिए और ऐसी स्थिति बनाने से बचना चाहिए कि धार्मिक आचरण के लिए भी कठोर कानून बनाने पड़ें।

बेरोजगारों की बढ़ती तादाद



रमन पाण्डेय
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
एवं समाज

इस आधुनिक युग में जहाँ भारत एक से बढ़कर एक ऊँचाई को छू रहा है और नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, वहीं विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर भारत काफी समय से एक अंदरूनी

सरकारें भी आजकल रोजगार के नाम पर वोट तो इकट्ठा करती हैं, लेकिन सत्ता में आने के बाद इस विषय में कुछ खास नहीं किया जाता है। इसे लेकर सरकार और अवाम के बीच द्वंद्व का माहौल बना रहता है। इसका समाधान सरकार

भी तरह का प्राइवेट काम कर रहा है या एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने जीवन यापन के लिए डॉक्टर इंजीनियर न बनकर किसी और कार्य की दिशा में जाता है तो ऐसे लोगों को समाज कम आँकता है। कुछ कामों को तो इतनी हीन दृष्टि



समस्या से जूझ रहा है। यह समस्या है बेरोजगारी की। बेरोजगारी आज भारत की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। 140 करोड़ की जनसंख्या वाला देश भारत जिसे युवाओं का देश कहा जाता है, उसमें युवाओं की आर्थिक अवस्था चिंताजनक है।

इस समस्या से जूझ रहे युवा मानसिक तनाव का शिकार होते हुए आत्महत्या के पड़ाव तक पहुँच जाते हैं। बेरोजगारी खत्म करने के लिए भारत एक लंबे अरसे से प्रयासरत रहा है, परंतु अब तक इसका कोई निदान नहीं हुआ है। आती-जाती

और अवाम दोनों के सामंजस्य से होगा।

ऐसा नहीं कि आज भारत में काम नहीं है। काम बहुत है। लेकिन मेरी नजर में समस्या प्रबंधन की है। रोजगार के चुनाव में उसकी प्रकृति की प्राथमिकता भी एक समस्या है। यहाँ ज्यादातर व्यक्ति यह चाहते हैं कि हम सरकारी सेक्टर में ही काम करें। जिसके लिए लाखों युवा सालों साल एक नौकरी के पीछे पड़े रहते हैं और नौकरी नहीं मिलने पर हताश हो जाते हैं।

समाज में एक नजरिया यह बन चुका है कि अगर कोई व्यक्ति किसी

से देखा जाता है कि लोग वह काम करने में ग्लानि महसूस करते हैं। अगर यूरोपीय या पश्चिमी देशों को देखें तो वहाँ ऐसी मानसिकता नहीं है। इसीलिए वहाँ के देशों में इस कदर बेरोजगारी नहीं देखी जाती है। भारत में बेरोजगारी खत्म करने के लिए सबसे पहले समाज की विचारधारा को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। आज के दौर में लोगों को यह समझने की जरूरत है कि काम कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। अगर हम ईमानदारी और मेहनत के साथ कोई भी कार्य करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

हर्षोल्लास से मना श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज का वार्षिकोत्सव 'सुरलोक'

श्री गुरुनानक देव खालसा कॉलेज में 3 से 5 अप्रैल 2024 को वार्षिकोत्सव 'सुरलोक' मनाया गया। इसमें कॉलेज के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने जोश और उत्साह से भाग लिया। इसका आयोजन हिंदी विभाग की प्रभारी एवं कार्यक्रम संयोजिका डॉ. अमरजीत कौर के नेतृत्व में कॉलेज की आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी ने किया।

आयोजन समिति में कॉलेज के

मैथमेटिक्स, पंजाबी और एनवायरनमेंट साइंस विभाग शामिल थे।

सुरलोक उत्सव का शुभारंभ कॉलेज के प्रोफेसर श्री गुरमोहिंदर सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के पहले और दूसरे दिन यानी 3 और 4 अप्रैल को विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जैसे, जस गायन, सोलो डांस, ग्रुप फोक डांस,

टर्बन टाईंग, फोटोग्राफी, काव्य मेला, देख तमाशा, रैप बैटल आदि। इनमें श्री गुरुनानक देव खालसा कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ अन्य कॉलेजों के विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया। उत्सव के अंतिम दिन लोकप्रिय पंजाबी गायक गुरी ने गायन का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गुरी ने अपने आकर्षक अंदाज और मधुर गायन से सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया।

‘गदर आंदोलन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयों का योगदान’ पर अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस



नई दिल्ली स्थित आकाशवाणी भवन के रंग भवन में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस कॉन्फ्रेंस का विषय गदर आंदोलन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयों का योगदान था। इसमें भारत की आजादी में गदर आंदोलन और प्रवासी भारतीयों के योगदान के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद और श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में देश-विदेश से पहुँचे विशिष्ट अतिथियों ने अपने विचारों से सभी को लाभान्वित किया। इस सत्र में आकाशवाणी की डायरेक्टर प्रिंसिपल जनरल वसुधा गुप्ता ने भी शिरकत की। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति संवेदनशील होने को कहा। श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर गुरमोहिंदर सिंह ने विषय पर प्रकाश डालते हुए इसे गंभीरता से समझने का आग्रह किया। वहीं

भारतीय विदेश राज्य मंत्री के. मुरलीधरन ने अप्रत्यक्ष रूप से जुड़कर सभी को इस कार्यक्रम के लिए बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

आयोजन के प्रथम दिन गुरजरात यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर प्रोफेसर नीरजा, पंजाब यूनिवर्सिटी से प्रोफेसर जसपाल, जापान के प्रोफेसर तोमियो मिजो कामी और श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की प्रोफेसर विनयनीत कौर समेत अन्य विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे। सत्र के दूसरे दिन प्रोफेसर निधि, प्रोफेसर अभिनव, डॉ. जसविंदर कौर बिंद्रा, पत्रकार राकेश पांडे समेत कई विशिष्ट अतिथि और शोधार्थी मौजूद रहे।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में गदर आंदोलन, प्रवासी भारतीयों और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। कॉन्फ्रेंस सफलतापूर्वक समाप्त होने पर कार्यक्रम के संयोजक प्रोफेसर जी.के. अरोड़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज के हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की संस्था हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी साहित्य विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन से हुई। इसके बाद सभी विशिष्ट अतिथियों का अंग वस्त्र और पौधा देकर स्वागत एवं सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में प्रो. बलराम पाणी ने भारतीय ज्ञान परंपरा पर विमर्श करते हुए कहा कि परंपरा वह है, जो समाज में निरंतर चली आ रही होती है और भारत की ज्ञान परंपरा बड़ी ही समृद्ध है, जहाँ वेद, पुराण जैसी पुस्तकों में जीवन जीने की कला समाहित है। जहाँ गाय को माता माना जाता है और पूरी दुनिया को वसुधैव कुटुंबक की दृष्टि से देखा जाता है। यही

भारतीय परंपरा है। साथ ही प्रो. बलराम पाणी ने अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर अपनी भाषा से बंधे रहने का और उसे उन्नति पर ले जाने का सुगम रास्ता बताया। प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता प्रोफेसर कृष्ण कुमार कौशिक ने अपने वक्तव्य को भाषा, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित करते हुए उसके मूल स्वरूप से अवगत करवाया और तुलनात्मक अध्ययन के जरिए सभी का ज्ञानवर्धन किया।

दूसरे सत्र की अतिथि प्रोफेसर इंदु वीरेंद्र ने भारतीय ज्ञान परंपरा और साहित्य को रामायण, महाभारत की कथा से जोड़ते हुए अपने विचारों को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। वहीं प्रोफेसर रेखा सेठी ने भारतीय साहित्य को लक्षित कर उसमें समाहित ज्ञान परंपरा पर

प्रकाश डालते हुए उन सभी चुनौतियों का भी जिक्र किया, जो इस विशाल परंपरा का हिस्सा हैं। संगोष्ठी के अन्य वक्ता प्रोफेसर के. वनजा और प्रोफेसर हरनेक सिंह गिल ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा और साहित्य पर विस्तार से चर्चा करते हुए हर एक पहलुओं को सामने रखा जो आज के दौर में ज्ञान की उन्नति में रोड़े बन रहे हैं। इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों ने इस विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में हिंदी व हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के सभी प्राध्यापक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे। इस संगोष्ठी के आयोजन में विभाग प्रभारी डॉ. अमरजीत कौर और संगोष्ठी की संयोजक डॉ. शैलजा का अहम योगदान रहा।



मार्गदर्शक मंडल

संरक्षक : प्रो. गुरमोहिंदर सिंह, प्राचार्य, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज
मार्गदर्शिका : डॉ. अमरजीत कौर, विभाग प्रभारी, हिंदी और हिंदी प. एवं ज. विभाग

संपादक मंडल

संपादक : महेन्द्र प्रताप सिंह, सहायक प्राध्यापक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
छात्र संपादक : आशी चौधरी, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
छात्र उप-संपादक : रोहित यादव, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
छात्र सहायक संपादक : रमन पाण्डे, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
सूचना नंदा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष